C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी A

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।

2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड – क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1×2=2) (2×3=6) 8

जीवन तीन तरह का होता है। पहला परोपकारी जीवन, दूसरा सामान्य जीवन और तीसरा अपकारी जीवन। इसे उत्तम, मध्यम और अधम जीवन भी कहते है। उत्तम जीवन उनका होता है, जिन्हें दूसरों का उपकार करने में सुख का एहसास होता है, भले ही उन्हें कष्ट या नुकसान उठाना पड़े। इसे यज्ञीय जीवन भी कहा जाता है। यही दैवत्वपूर्ण जीवन है। इस जीवन का आधार यज्ञ होता है। शास्त्र में यज्ञ उसे कहा गया है, जिनसे प्राणीमात्र का हित होता है। यानी जिन कर्मों से समाज में सुख, ऐश्वर्य और प्रगति में बढ़ोत्तरी होती है। चारों वेदों में कहा गया है धरती का केंद्र या आधार यज्ञपूर्ण जीवन ही है, यानी सत्कर्मों पर ही यह धरती टिकी हुई है। इसलिए कहा गया है कि यदि पृथ्वी को बचाना है तो श्रेष्ठ कर्मों की तरफ़ समाज को लगातार प्रेरित करने के लिए कार्य करना चाहिए। सामान्य जीवन वह होता है जो परंपरा के मुताबिक चलता है। यानी अपना और दूसरे का स्वार्थ सधता रहे। कोई बहुत ऊँची समाजोत्थान या परोपकार ही भावना नहीं होती है। अपकारी यानि दूसरों को परेशान और दुख देने वाला जीवन ही राक्षसी जीवन या शैतानी ज़िदगी कही जाती है। इस तरह के जीवन से ही समाज में सभी तरह की समस्याएँ पैदा होती हैं। इस धरती को यदि समस्याओं

और हिंसा से मुक्त करना है तो दैवत्वपूर्ण जीवन की तरफ विश्व और समाज को चलना पड़ेगा। सत्कर्म तभी किए जा सकते हैं, जब हम सोच-विचार कर कर्म करेंगे। विचार के साथ किया हुआ कर्म ही अपना हित तो करता है परिवार, समाज और दुनिया का भी इससे भला होता है। जितना हम प्राणीहित के लिए संकल्पित होंगे, उतना हमारा बौद्धिक और आत्मिक उत्थान होता जाएगा। हमारे अंदर मनुष्यता के भाव लगातार बढ़ते जाएँगे। प्रेम, दया करुणा, अहिंसा, सत्य और सद्भावना की प्रवृत्ति लगातार बढ़ती जाएगी। और ये सारे सद्‌गुण ही जीवन यज्ञ को सफल बनाने के लिए ज़रूरी माने गए हैं।

1. यज्ञीय जीवन किसे कहा गया है?
2. सामान्य जीवन क्या है?
3. धरती को सभी समस्याओं से मुक्त करने के लिए हमें क्या करना होगा?
4. जीवन यज्ञ को सफल बनाने के लिए क्या ज़रूरी है?
5. शास्त्र में यज्ञ किसे कहा गया है?

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 1×3=3

जो साथ फूलों के चले,
जो ढाल पाते ही ढले,

वह ज़िन्दगी क्या ज़िन्दगी,
जो सिर्फ़ पानी-सी बही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं,

अपने हृदय का सत्य,
अपने आप हमको खोजना।
अपने नयन का नीर,
अपने आप हमको पोंछना।

आकाश सुख देगा नहीं,
धरती पसीजी है कहीं,

हर राही को भटक कर,
ही दिशा मिलती रही,
सच हम नहीं सच तुम नहीं।

बेकार है मुस्कान से,
ढकना हृदय की खिन्नता।
आदर्श हो सकती नहीं,
तन और मन की भिन्नता।

जब तक बंधी है चेतना,
जब तक हृदय दुख से घना,

तब तक न मानूँगा कभी,
इस राह को ही मैं सही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।

सच है महज संघर्ष ही !
सच है महज संघर्ष ही।
(जगदीश गुप्त)

(क) कवि किस प्रकार की ज़िन्दगी को सार्थक जिंदगी नहीं मानता?
(ख) जीवन-संघर्ष में कैसे लोग विजयी होते हैं?
(ग) कवि अपने आँसुओं को स्वयं ही पोंछने के लिए क्यों कहता हैं?

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2×2=4

माटी, तुझे प्रणाम!
मेरे पुण्य देश की माटी, तू कितनी अभिराम!
तुझे लगा माथे से सारे कष्ट हो गए दूर,
क्षण-भर में ही भूल गया मैं शत्रु-यंत्रणा क्रूर,
सुख स्फूर्ति का इस काया में हुआ पुनः संचार -
लगता जैसे आज युगों के बाद मिला विश्राम!
माटी तुझे प्रणाम!
तुझसे बिछुड़ मिला प्राणों को कभी न पल-भर चैन,
तेरे दर्शन हेतु रात-दिन तरस रहे थे नैन,
धनी हुआ तेरे चरणों में आकर यह अस्तित्व-
हुई साधना सफल, भक्त को प्राप्त हो गए राम!
माटी, तुझे प्रणाम!
अमर मृत्तिके! लगती तू पारस से बढ़ कार आज,
कारा-जड़ जीवन सचेत फिर, तुझ को छू कर आज,
मरणशील हम, किन्तु अमर तू, है अमर्त्य यह धाम-
हम मर-मर कर अमर करेंगे तेरा उज्ज्वल नाम!

1. मातृभूमि को प्रणाम करने के बाद कैसी अनुभूति होती है?
2. माटी से बिछुड़ने तथा मिलने पर कवि को कैसा अनुभव हुआ?

खंड - ख

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1x3=3

1. जब राधिका ने मेहनत की, तब वह प्रथम आई। (रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार बताइए।)
2. जब प्रात:काल हुआ तब पक्षी चहचहाने लगे। (संयुक्त वाक्य में रूपांतरित कीजिए।)
3. परिश्रमी को सफलता मिलती है। (मिश्र वाक्य में रूपांतरित कीजिए।)

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए: 1x4=4

1. **यह** पुस्तक मेरी है।
2. गीता ने पुस्तक **पढ़** ली।
3. **जल्दी** चलो गाडी जानेवाली है।
4. वाह उपवन में **सुंदर** फूल खिले हैं।

प्र. 6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x4=4

1. माँ भाग नहीं सकती। (भाववाच्य में बदलिए।)
2. बालक ने बदमाशों को पकड़ा। (कर्मवाच्य में बदलिए।)
3. मैं अलमारी नहीं खोल सकता। (कर्मवाच्य में बदलिए।)
4. मम्मी बर्तन धोती है। (कर्मवाच्य में बदलिए।)

प्र. 7. निम्नांकित काव्यांशों में प्रयुक्त रस पहचानिए: 1x4=4

1. वह खून कहो किस मतलब का,जिसमें उबाल का नाम नहीं।
   वह खून कहो किस मतलब का,आ सके देश के काम नहीं।
2. एक अजगरहि लखि, एक मृगराय।
   विकल वटोही बीच ही परयो मूर्च्छा खाय।।
3. श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगे। सब शील अपना भूल कर करतल युगल मलने लगे॥ संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े। करते हुए यह घोषणा वे हो गए उठ कर खड़े॥ (मैथिलीशरण गुप्त)
4. सर पर बैठयो काग, आँख दोउ खात निकारत।
   खीचत जीभही स्यार,अतिहि आनंद उर धारत।।

प्र. 8. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (1+2+2)

पर यह पितृ-गाथा मैं इसलिए नहीं गा रही कि मुझे उनका गौरव-गान करना है, बल्कि मैं तो यह देखना चाहती हूँ कि उनके व्यक्तित्व की कौन-सी खूबी और खामियाँ मेरे व्यक्तित्व के ताने-बाने में गुँथी हुई हैं या कि अनजाने-अनचाहे किए उनके व्यवहार ने मेरे भीतर किन ग्रंथियों को जन्म

दे दिया। मैं काली हूँ। बचपन में दुबली और मरियल भी थी। गोरा रंग पिता जी की कमज़ोरी थी सो बचपन में मुझसे दो साल बड़ी, खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख बहिन सुशीला से हर बात में तुलना और फिर उसकी प्रशंसा ने ही, क्या मेरे भीतर ऐसे गहरे हीन-भाव की ग्रंथि पैदा नहीं कर दी कि नाम, सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावज़ूद आज तक मैं उससे उबर नहीं पाई? आज भी परिचय करवाते समय जब कोई कुछ विशेषता लगाकर मेरी लेखकीय उपलब्धियों का ज़िक्र करने लगता है तो मैं संकोच से सिमट ही नहीं जाती बल्कि गड़ने-गड़ने को हो आती हूँ। शायद अचेतन की किसी पर्त के नीचे दबी इसी हीन-भावना के चलते मैं अपनी किसी भी उपलब्धि पर भरोसा नहीं कर पाती...सब कुछ मुझे तुक्का ही लगता है।

1. प्रस्तुत गद्यांश में लेखिका किस के बारे में बात कर रही है?
2. लेखिका बचपन में कैसी दिखती थी इसका उनके जीवन पर क्या परिणाम हुआ?
3. लेखिका के जीवन पर पिताजी का क्या प्रभाव पड़ा?

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=8

1. भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?
2. बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?
3. लेखक ने फ़ादर बुल्के को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' क्यों कहा है?
4. मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?

प्र. 10. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2+2+1)

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी;
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,

कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण-
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
छाया मत छूना

(क) 'छाया' शब्द यहाँ किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है?
(ख) कवि ने छाया' को छूने के लिए मना क्यों किया है?
(ग) 'छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी' का आशय स्पष्ट कीजिए।

प्र.11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=8

1. 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?
2. कवि की आँख फागुन की सुन्दरता से क्यों नहीं हट रही है?
3. परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा?
4. आप अपने जीवन में मुख्य कलाकार की भूमिका निभाना पसंद करेंगे या संगतकार की? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

प्र.12. देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी कई तरह से कठिनाईयों का मुकाबला करते है। सैनिकों के जीवन से किन-किन जीवन-मूल्यों को अपनाया जा सकता है? चर्चा कीजिए। 4

खंड – घ

प्र. 13. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए: 10

- श्रम की महत्ता
- विद्यालय वार्षिकोत्सव

प्र. 14. अपने क्षेत्र के पोस्टमास्टर को ठीक से डाक वितरण न होने की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए पत्र लिखिए। 5

अथवा

छात्रावास में रहने वाली अपनी छोटी बहन को फैशन की ओर अधिक रुझान न रख, ध्यानपूर्वक पढ़ाई करने की सीख देते हुए पत्र लिखिए।

प्र. 15. कपड़े धोने वाले पावडर का विज्ञापन तैयार कीजिए: 5

C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी A

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।

2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड – क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1×2=2) (2×3=6) 8

जीवन तीन तरह का होता है। पहला परोपकारी जीवन, दूसरा सामान्य जीवन और तीसरा अपकारी जीवन। इसे उत्तम, मध्यम और अधम जीवन भी कहते है। उत्तम जीवन उनका होता है, जिन्हें दूसरों का उपकार करने में सुख का एहसास होता है, भले ही उन्हें कष्ट या नुकसान उठाना पड़े। इसे यज्ञीय जीवन भी कहा जाता है। यही दैवत्वपूर्ण जीवन है। इस जीवन का आधार यज्ञ होता है। शास्त्र में यज्ञ उसे कहा गया है, जिनसे प्राणीमात्र का हित होता है। यानी जिन कर्मों से समाज में सुख, ऐश्वर्य और प्रगति में बढ़ोत्तरी होती है। चारों वेदों में कहा गया है धरती का केंद्र या आधार यज्ञपूर्ण जीवन ही है, यानी सत्कर्मों पर ही यह धरती टिकी हुई है। इसलिए कहा गया है कि यदि पृथ्वी को बचाना है तो श्रेष्ठ कर्मों की तरफ़ समाज को लगातार प्रेरित करने के लिए कार्य करना चाहिए। सामान्य जीवन वह होता है जो परंपरा के मुताबिक चलता है। यानी अपना और दूसरे का स्वार्थ सधता रहे। कोई बहुत ऊँची समाजोत्थान या परोपकार ही भावना नहीं होती है। अपकारी यानि दूसरों को परेशान और दुख देने वाला जीवन ही राक्षसी जीवन या शैतानी ज़िदगी कही जाती है। इस तरह के जीवन से ही समाज में सभी तरह की समस्याएँ पैदा होती हैं। इस धरती को यदि समस्याओं

और हिंसा से मुक्त करना है तो दैवत्वपूर्ण जीवन की तरफ विश्व और समाज को चलना पड़ेगा। सत्कर्म तभी किए जा सकते हैं, जब हम सोच-विचार कर कर्म करेंगे। विचार के साथ किया हुआ कर्म ही अपना हित तो करता है परिवार, समाज और दुनिया का भी इससे भला होता है। जितना हम प्राणीहित के लिए संकल्पित होंगे, उतना हमारा बौद्धिक और आत्मिक उत्थान होता जाएगा। हमारे अंदर मनुष्यता के भाव लगातार बढ़ते जाएँगे। प्रेम, दया करुणा, अहिंसा, सत्य और सद्भावना की प्रवृत्ति लगातार बढ़ती जाएगी। और ये सारे सद्‌गुण ही जीवन यज्ञ को सफल बनाने के लिए ज़रूरी माने गए हैं।

1. यज्ञीय जीवन किसे कहा गया है?

   उत्तर : जीवन तीन तरह का होता है। पहला परोपकारी जीवन, दूसरा सामान्य जीवन और तीसरा अपकारी जीवन। इसे उत्तम, मध्यम और अधम जीवन भी कहते है। उत्तम जीवन उनका होता है, जिन्हें दूसरों का उपकार करने में सुख का एहसास होता है, भले ही उन्हें कष्ट या नुकसान उठाना पड़े। इसे यज्ञीय जीवन कहा जाता है।

2. सामान्य जीवन क्या है?

   उत्तर : सामान्य जीवन वह होता है जो परंपरा के मुताबिक चलता है। यानी अपना और दूसरे का स्वार्थ सधता रहे। कोई बहुत ऊँची समाजोत्थान या परोपकार ही भावना नहीं होती है।

3. धरती को सभी समस्याओं से मुक्त करने के लिए हमें क्या करना होगा?

   उत्तर : धरती को यदि समस्याओं और हिंसा से मुक्त करना है तो दैवत्वपूर्ण जीवन की तरफ विश्व और समाज को चलना पड़ेगा।

4. जीवन यज्ञ को सफल बनाने के लिए क्या ज़रूरी है?

उत्तर : जितना हम प्राणीहित के लिए संकल्पित होंगे, उतना हमारा बौद्धिक और आत्मिक उत्थान होता जाएगा। हमारे अंदर मनुष्यता के भाव लगातार बढ़ते जाएँगे। प्रेम, दया करुणा, अहिंसा, सत्य और सद्भावना की प्रवृत्ति लगातार बढ़ती जाएगी। और ये सारे सद्गुण ही जीवन यज्ञ को सफल बनाने के लिए ज़रूरी माने गए हैं।

5. शास्त्र में यज्ञ किसे कहा गया है?

उत्तर : शास्त्र में यज्ञ उसे कहा गया है, जिनसे प्राणीमात्र का हित होता है। यानी जिन कर्मों से समाज में सुख, ऐश्वर्य और प्रगति में बढ़ोत्तरी होती है।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 1×3=3

जो साथ फूलों के चले,
जो ढाल पाते ही ढले,

वह ज़िन्दगी क्या ज़िन्दगी,
जो सिर्फ़ पानी-सी बही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं,

अपने हृदय का सत्य,
अपने आप हमको खोजना।
अपने नयन का नीर,
अपने आप हमको पोंछना।

आकाश सुख देगा नहीं,
धरती पसीजी है कहीं,

हर राही को भटक कर,
ही दिशा मिलती रही,
सच हम नहीं सच तुम नहीं।

बेकार है मुस्कान से,
ढकना हृदय की खिन्नता।
आदर्श हो सकती नहीं,
तन और मन की भिन्नता।

जब तक बंधी है चेतना,
जब तक हृदय दुख से घना,

तब तक न मानूँगा कभी,
इस राह को ही मैं सही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।

सच है महज संघर्ष ही !
सच है महज संघर्ष ही।
(जगदीश गुप्त)

(क) कवि किस प्रकार की ज़िन्दगी को सार्थक जिंदगी नहीं मानता?

उत्तर : कवि उस जिंदगी को सार्थक जिंदगी नहीं मानता जो संघर्षपूर्ण न हो और स्वार्थपूर्ण व्यवहार की अनुगामी हो।

(ख) जीवन-संघर्ष में कैसे लोग विजयी होते हैं?

उत्तर : जीवन-संघर्ष में वही मनुष्य विजयी होते हैं जो निराश हुए बिना निरंतर उत्साहित होकर आगे बढ़ते रहते हैं और ध्येय-पथ की ओर अग्रसर होते हैं।

(ग) कवि अपने आँसुओं को स्वयं ही पोंछने के लिए क्यों कहता हैं?

उत्तर : कवि अपने आँसुओं को स्वयं ही पोंछने के लिए कहता है, क्योंकि वह बताना चाहता है कि निरीह आदमी की कोई सहायता नहीं करता। कवि ने उदाहरण स्वरूप कहा है कि आकाश और धरती मनुष्य की निरीहता पर द्रवित नहीं होते हैं। अतः अपना पथ स्वयं प्रशस्त करना है।

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2×2=4

माटी, तुझे प्रणाम!
मेरे पुण्य देश की माटी, तू कितनी अभिराम!
तुझे लगा माथे से सारे कष्ट हो गए दूर,
क्षण-भर में ही भूल गया मैं शत्रु-यंत्रणा क्रूर,
सुख स्फूर्ति का इस काया में हुआ पुनः संचार -
लगता जैसे आज युगों के बाद मिला विश्राम!
माटी तुझे प्रणाम!
तुझसे बिछुड़ मिला प्राणों को कभी न पल-भर चैन,
तेरे दर्शन हेतु रात-दिन तरस रहे थे नैन,
धनी हुआ तेरे चरणों में आकर यह अस्तित्व-
हुई साधना सफल, भक्त को प्राप्त हो गए राम!
माटी, तुझे प्रणाम!
अमर मृत्तिके! लगती तू पारस से बढ़ कार आज,
कारा-जड़ जीवन सचेत फिर, तुझ को छू कर आज,
मरणशील हम, किन्तु अमर तू, है अमर्त्य यह धाम-
हम मर-मर कर अमर करेंगे तेरा उज्ज्वल नाम!

1. मातृभूमि को प्रणाम करने के बाद कैसी अनुभूति होती है?
उत्तर : मिट्टी को छूते ही कवि के सारे कष्ट और यंत्रणाएं दूर हो गई, शरीर में स्फूर्ति का संचार हो गया कवि को मिट्टी को छूते ही ऐसा लगा जैसे युगों बाद उसे ऐसा विश्राम मिला हो।

2. माटी से बिछुड़ने तथा मिलने पर कवि को कैसा अनुभव हुआ?
उत्तर : माटी से बिछुड़कर कवि को कभी भी चैन न मिला वह दिनरात माटी के लिए तरसता रहा जैसे एक भक्त अपने ईश्वर को पाने के लिए तडपता है ठीक उसी प्रकार कवि अपनी माटी के लिए तड़पता था

खंड - ख

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1x3=3

1. जब राधिका ने मेहनत की, तब वह प्रथम आई। (रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार बताइए।)
उत्तर : मिश्र वाक्य

2. जब प्रात:काल हुआ तब पक्षी चहचहाने लगे। (संयुक्त वाक्य में रूपांतरित कीजिए।)
उत्तर : प्रात:काल हुआ,और पक्षी चहचहाने लगे।

3. परिश्रमी को सफलता मिलती है। (मिश्र वाक्य में रूपांतरित कीजिए।)
उत्तर : जो परिश्रमी होता है, उसे सफलता मिलती है।

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए: 1x4=4

1. **यह** पुस्तक मेरी है।
उत्तर : यह - सार्वनामिक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग

2. गीता ने पुस्तक **पढ़** ली।
उत्तर : पढ़ - सकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, भूतकाल

3. **जल्दी** चलो गाडी जानेवाली है।
उत्तर : जल्दी - अव्यय, क्रिया विशेषण, 'चलो' क्रिया की विशेषता

4. वाह उपवन में **<u>सुंदर</u>** फूल खिले हैं।
   उत्तर : सुंदर - गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, बहुवचन, 'फूल' विशेष्य

प्र. 6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x4=4

1. माँ भाग नहीं सकती। (भाववाच्य में बदलिए।)
   उत्तर : माँ से भागा नहीं जाता।

2. बालक ने बदमाशों को पकड़ा। (कर्मवाच्य में बदलिए।)
   उत्तर : बालक द्वारा बदमाशों को पकड़ा गया।

3. मैं अलमारी नहीं खोल सकता। (कर्मवाच्य में बदलिए।)
   उत्तर : मुझसे अलमारी नहीं खोला जा जाती।

4. मम्मी बर्तन धोती है। (कर्मवाच्य में बदलिए।)
   उत्तर : मम्मी द्वारा बर्तन धोया जाता है।

प्र. 7. निम्नांकित काव्यांशों में प्रयुक्त रस पहचानिए: 1x4=4

1. वह खून कहो किस मतलब का,जिसमें उबाल का नाम नहीं।
   वह खून कहो किस मतलब का,आ सके देश के काम नहीं।
   उत्तर : वीर रस

2. एक अजगरहि लखि, एक मृगराय।
   विकल वटोही बीच ही परयो मूर्च्छा खाय।।
   उत्तर : भयानक रस

3. श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगे। सब शील अपना भूल कर करतल युगल मलने लगे॥ संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े। करते हुए यह घोषणा वे हो गए उठ कर खड़े॥ (मैथिलीशरण गुप्त)
   उत्तर : रौद्र रस

4. सर पर बैठयो काग, आँख दोउ खात निकारत।
खीचत जीभही स्यार,अतिहि आनंद उर धारत।।
उत्तर : वीभत्स रस

प्र. 8. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (1+2+2)

पर यह पितृ-गाथा मैं इसलिए नहीं गा रही कि मुझे उनका गौरव-गान करना है, बल्कि मैं तो यह देखना चाहती हूँ कि उनके व्यक्तित्व की कौन-सी खूबी और खामियाँ मेरे व्यक्तित्व के ताने-बाने में गुँथी हुई हैं या कि अनजाने-अनचाहे किए उनके व्यवहार ने मेरे भीतर किन ग्रंथियों को जन्म दे दिया। मैं काली हूँ। बचपन में दुबली और मरियल भी थी। गोरा रंग पिता जी की कमज़ोरी थी सो बचपन में मुझसे दो साल बड़ी, खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख बहिन सुशीला से हर बात में तुलना और फिर उसकी प्रशंसा ने ही, क्या मेरे भीतर ऐसे गहरे हीन-भाव की ग्रंथि पैदा नहीं कर दी कि नाम, सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावज़ूद आज तक मैं उससे उबर नहीं पाई? आज भी परिचय करवाते समय जब कोई कुछ विशेषता लगाकर मेरी लेखकीय उपलब्धियों का ज़िक्र करने लगता है तो मैं संकोच से सिमट ही नहीं जाती बल्कि गड़ने-गड़ने को हो आती हूँ। शायद अचेतन की किसी पर्त के नीचे दबी इसी हीन-भावना के चलते मैं अपनी किसी भी उपलब्धि पर भरोसा नहीं कर पाती...सब कुछ मुझे तुक्का ही लगता है।

1. प्रस्तुत गद्यांश में लेखिका किस के बारे में बात कर रही है?
उत्तर : प्रस्तुत गद्यांश में लेखिका अपने पिता के बारे में बात कर रही है।

2. लेखिका बचपन में कैसी दिखती थी इसका उनके जीवन पर क्या परिणाम हुआ?
उत्तर : लेखिका बचपन में काली,दुबली और मरियल दिखती थी। इस कारण उनके पिताजी उनकी बड़ी बहन से हमेशा उनकी तुलना

किया करते थे जिसके फलस्वरूप लेखिका के मन में एक हीन ग्रंथि ने जन्म ले लिया जिससे वे अभी तक उभर नहीं पाई हैं।

3. लेखिका के जीवन पर पिताजी का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : लेखिका के जीवन पर पिताजी का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे हीन भावना से ग्रसित हो गई। इसी के परिमाण स्वरुप उनमें आत्मविश्वास की भी कमी हो गई थी। पिता के द्वारा ही उनमें देश प्रेम की भावना का भी निर्माण हुआ था।

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=8

1. भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

उत्तर : भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले छोड़कर नहीं जाना चाहती थी क्योंकि भगत के बुढ़ापे का वह एकमात्र सहारा थी। पुत्रवधू को इस बात की चिंता थी कि यदि वह भी चली गयी, तो भगत के लिए भोजन कौन बनाएगा। यदि भगत बीमार हो गए, तो उनकी सेवा-शुश्रूषा कौन करेगा। उसके चले जाने के बाद भगत की देखभाल करने वाला और कोई नहीं था।

2. बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर : हम लेखक यशपाल के विचारों से पूरी तरह सहमत हैं। किसी भी कहानी की रचना उसके आवश्यक तत्वों - कथावस्तु, घटना, पात्र आदि के बिना संभव नहीं होती। घटना तथा कथावस्तु कहानी को आगे बढ़ाते हैं, पात्रों द्वारा संवाद कहे जाते हैं। कहानी में कोई न कोई विचार, बात या उद्देश्य भी अवश्य होना चाहिए। ये कहानी के लिए आवश्यक तत्व हैं।

3. लेखक ने फ़ादर बुल्के को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' क्यों कहा है?

उत्तर : फ़ादर बुल्के मानवीय करुणा की प्रतिमूर्ति थे। उनके मन में सभी के लिए प्रेम भरा था जो कि उनके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई देता था। वे लोगों को अपने आशीषों से भर देते थे। उनकी आँखों की चमक में असीम वात्सल्य तैरता रहता था। दुःख से विरक्त लोगों को वे सांत्वना के दो बोल बोलकर शीतलता प्रदान करते थे। किसी भी मानव का दु:ख उनसे देखा नहीं जाता था। उसके कष्ट दूर करने के लिए वे यथाशक्ति प्रयास करते थे।

4. मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?

उत्तर : मूर्ति पर लगे सरकंडे का चश्मा इस बात का प्रतीक है कि आज भी देश की आने वाली पीढ़ी के मन में देशभक्तों के लिए सम्मान की भावना है। भले ही उनके पास साधन न हो परन्तु फिर भी सच्चे हृदय से बना वह सरकंडे का चश्मा भी भावनात्मक दृष्टि से मूल्यवान है। अतः उम्मीद है कि बच्चे गरीबी और साधनों के बिना भी देश के लिए कार्य करते रहेंगे।

प्र. 10. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2+2+1)

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी;
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण-
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
छाया मत छूना

(क) 'छाया' शब्द यहाँ किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर : 'छाया मत छूना' कविता में छाया शब्द का प्रयोग सुखद अनुभूति के लिए किया है।

(ख) कवि ने छाया' को छूने के लिए मना क्यों किया है?

उत्तर : कवि ने मानव की कामनाओं-लालसाओं के पीछे भागने की प्रवृत्ति को दुखदायी माना है। हम विगत स्मृतियों के सहारे नहीं जी सकते, हमें वर्तमान में जीना है। अपने वर्तमान के कठिन पलों को बीते हुए पलों की स्मृति के साथ जोड़ना हमारे लिए बहुत कष्टपूर्ण हो सकता है। वह मधुर स्मृति हमें कमज़ोर बनाकर हमारे दुख को और भी कष्टदायक बना देती है।

(ग) 'छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इसका तात्त्पर्य है - जब हम पुरानी यादों में जीते हैं तो हमारे सामने न केवल बीती हुई मीठी यादों के दृश्य सामने आ जाते हैं, बल्कि उन क्षणों की सुगंध भी तरोताज़ा हो उठती है।

प्र.11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=8

1. 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उत्तर : 'मरजादा न लही' के माध्यम से प्रेम की मर्यादा न रहने की बात की जा रही है। कृष्ण के मथुरा चले जाने पर वह शांत भाव से श्री कृष्ण के लौटने की प्रतीक्षा कर रही थीं। वह चुप्पी लगाए अपनी मर्यादाओं में लिपटी हुई इस वियोग को सहन कर रही थीं क्योंकि वे श्री कृष्ण से प्रेम करती हैं। कृष्ण ने योग का संदेश देने के लिए उद्धव को भेज दिया। गोपियों उनको उनकी मर्यादा छोड़कर बोलने पर मजबूर कर दिया है। प्रेम के बदले

प्रेम का प्रतिदान ही प्रेम की मर्यादा है, लेकिन कृष्ण ने गोपियों के प्रेम रस के उत्तर में योग का संदेश भेज दिया। इस प्रकार कृष्ण ने प्रेम की मर्यादा नहीं रखी। वापस लौटने का वचन देकर भी वे गोपियों से मिलने नहीं आए।

2. कवि की आँख फागुन की सुन्दरता से क्यों नहीं हट रही है?

उत्तर : फागुन बहुत मतवाला, मस्त और शोभाशाली है। फागुन के महीने में प्राकृतिक सौंदर्य अपने चरम पर होता है। उसका रूप सौंदर्य रंग-बिरंगे फूलों और हवाओं में प्रकट होता है। इसलिए आँखें फागुन की सुन्दरता से मंत्रमुग्ध होकर हटाने से भी नहीं हटती।

3. परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा?

उत्तर : परशुराम ने अपने विषय में ये कहा कि वे बाल ब्रह्मचारी हैं और क्रोधी स्वभाव के हैं। समस्त विश्व में क्षत्रिय कुल के विद्रोही के रुप में विख्यात हैं। उन्होंने अनेकों बार पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन कर इस पृथ्वी को ब्राह्मणों को दान में दिया है और अपने हाथ में धारण इस फरसे से सहस्त्रबाहु के बाँहों को काट डाला है। इसलिए हे नरेश पुत्र। मेरे इस फरसे को भली भाँति देख ले। राजकुमार, तू क्यों अपने माता-पिता को सोचने पर विवश कर रहा है। मेरे इस फरसे की भयानकता गर्भ में पल रहे शिशुओं को भी नष्ट कर देती है।

4. आप अपने जीवन में मुख्य कलाकार की भूमिका निभाना पसंद करेंगे या संगतकार की? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : 'संगतकार' पाठ में लेखक की उपयोगिता पर प्रकाश डालता है। यदि मुझे अपने जीवन में अवसर मिले तो मैं अवश्य ही संगतकार की भूमिका निभाना पसंद करुँगा। तब मैं अपनी सारी शक्ति मुख्य कलाकार को उठाने में लगा दूँगा। यदि वह अच्छा

प्रदर्शन करेगा तो उसका श्रेय मुझे भी मिलेगा। उसके मान में मेरा भी मान होगा और उसके मान-सम्मान को देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता होगी।

प्र.12. देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी कई तरह से कठिनाईयों का मुकाबला करते है। सैनिकों के जीवन से किन-किन जीवन-मूल्यों को अपनाया जा सकता है? चर्चा कीजिए। 4

उत्तर : 'साना साना हाथ जोडि' पाठ में देश की सीमा पर तैनात फौजियों की चर्चा की गई है। वस्तुत: सैनिक अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह ईमानदारी, समर्पण तथा अनुशासन से करते है। सैनिक देश की सीमाओं की रक्षा के लिए कटिबध्द रहते है। देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी प्रकृति के प्रकोप को सहन करते हैं। हमारे सैनिकों (फौजी) भाईयों को उन बर्फ से भरी ठंड में ठिठुरना पड़ता है। जहाँ पर तापमान शून्य से भी नीचे गिर जाता है। वहाँ नसों में खून को जमा देने वाली ठंड होती है। वह वहाँ सीमा की रक्षा के लिए तैनात रहते हैं और हम आराम से अपने घरों पर बैठे रहते हैं। ये जवान हर पल कठिनाइयों से जूझते हैं और अपनी जान हथेली पर रखकर जीते हैं। हमें सदा उनकी सलामती की दुआ करनी चाहिए। उनके परिवारवालों के साथ हमेशा सहानुभूति, प्यार व सम्मान के साथ पेश आना चाहिए। इन सैनिकों के जीवन से हमें अटूट देशप्रेम, त्याग, निष्ठा, समर्पण आदि मूल्यों को जीवन में अपनाना चाहिए।

खंड – घ

प्र. 13. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए: 10

श्रम की महत्ता

परिश्रम का अर्थ है उद्दयम अथवा 'मेहनत'। परिश्रम वह माध्यम है जो मनुष्य को अपने लक्ष्य तक पहुँचाता है।

परिश्रम का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। मनुष्य परिश्रम के द्वारा कठिन से कठिन कार्य सिद्ध कर सकता है। मेहनत के ही द्वारा मनुष्य अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। हर मानव की कुछ इच्छाएँ व आवश्यकता होती हैं। वह सुख शांति की कामना करता है, दुनिया में नाम की इच्छा रखता है। किन्तु कल्पना से ही सब कार्य सिद्ध नहीं हो जाते, उसके लिए हमें कठिन परिश्रम का सहारा लेना पड़ता है।

परिश्रम के बल पर मानव अपने निर्धारित लक्ष्य तक पहुँच सकता है। परिश्रम के ही बल पर मनुष्य अपना भाग्य बना सकता है। परिश्रम केवल अकेले मनुष्य के लिए ही नहीं लाभदायक होता है। हम देख सकते हैं, कि जिस देश के लोग परिश्रमी होते हैं, वह पूरा देश तरक्की प्राप्त करता है। अमरीका, चीन, रूस और जापान, इसके उदहारण हैं। भारत के टाटा, बाटा, बिड़ला, रिलायंस आदि धनकुबेरों ने अपने अनुभव बतलाते हुए यही कहा है कि वे लोग जन्मजात धन संपन्न नहीं थे। उनकी इस विशाल संपत्ति का मूलाधार वह अगाध परिश्रम ही रहा है जिससे उन्होंने कभी मुँह नहीं चुराया। परिश्रम करते-करते उनमें प्रतिभा का भी विकास होता गया जिससे वे इतने लंबे-चौड़े कारोबार की स्थापना कर सके। प्रबंध एवं संचालन में सफल हो सके। प्रकृति भी हमें परिश्रम करने की प्रेरणा देती है। चींटियाँ और मधुमख्खियाँ प्रकृति की प्रेरणा स्त्रोत हैं। छात्रों के जीवन में तो परिश्रम का बहुत अधिक महत्त्व होता है। मानव का शारीरिक व मानसिक विकास भी परिश्रम पर निर्भर करता है। आधुनिक मनुष्य वैज्ञानिक यंत्रों का पुजारी बनता जा रहा है। परिश्रम की ओर से लापरवाही इसमें घर करती जा रही हैं। नैतिक पतन हो रहा है जिससे अशांति फैलती जा रही है। फलस्वरूप समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए भी परिश्रम आवश्यक है।

कुछ लोग सफ़लता का राज़, परिश्रम की जगह भाग्य को मानते हैं। उनका कहना होता है, कि भाग्य में जो लिखा होता है, उसे टाला नहीं जा सकता। यह बात असत्य है। मनुष्य यदि परिश्रम करे, तो होनी को भी टाल सकता है। किसी ने सत्य ही कहा है, कि परिश्रम ही सफ़लता की कुंजी है। एक आलसी व अकर्मण्य मानव कभी अपना लक्ष्य नहीं प्राप्त

कर सकता। भाग्य के सहारे बैठने से कार्य संपन्न नहीं होते। विद्यार्थी वर्ग को भी परीक्षा में सफलता पाने के लिये अटूट श्रम करना पड़ता है। मानव परिश्रम से अपने भाग्य को बना सकता है, कहा जाता है कि ईश्वर भी उन्हीं की मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं करते हैं। जैसे सोये हुए शेर के मुख में पशु स्वयं ही प्रवेश नहीं करता उसे भी परिश्रम करना पड़ता है, वैसे ही केवल मन की इच्छा से काम सिद्ध नही होते उनके लिए परिश्रम करना पड़ता है।

परिश्रम व सफलता का आपस में बड़ा गहरा संबंध है। हमें तभी सफलता मिलती है जब हम परिश्रम करते हैं। परिश्रम से मनुष्य सदैव मेहनती बना रहता है, परिश्रम जीवन को गति प्रदान करता है। यह मनुष्य के जीवन में बहुत ही महत्व रखता है। परिश्रम की उपेक्षा मनुष्य को निकम्मा व असफल बना देती है। परिश्रम समस्त कठिनाइयों से निकालने में समर्थ होता है। परिश्रमी मनुष्य भाग्य के भरोसे नहीं बैठे रहते हैं। परिश्रम के दम पर कई महान विभूतियों ने अंसभव कार्यों को संभव कर दिखाया है। जिस देश में लोग परिश्रम करते हैं, वह देश उन्नति, विकास और सफलता के शिखर पर खड़ा रहता है।

अत: हम कह सकते हैं कि मेहनत वह सुनहरी कुंजी है जो भाग्य के बंद कपाट खोल देती है। परिश्रम ही जीवन की सफलता का रहस्य है।

विद्यालय वार्षिकोत्सव

विद्यालय अर्थात्+आलय यानी विद्या का घर। मैं गांधी माध्यमिक विद्यालय में पढ़ता हूँ। यह नगर के मध्य नई सड़क पर स्थित है। मेरे विद्यालय का भवन नवनिर्मित है अत: भव्य और सर्वसुविधाओं से युक्त है। सभी गुरुजन विद्वान, परिश्रमी एवं छात्रों को हर समय मार्गदर्शन देते हैं। हमारे विद्यालय में अध्ययन के अतिरिक्त अन्य कार्यक्रम भी होते हैं। हर शनिवार को बालसभा होती है। गांधी जयंती, तुलसी जयंती, हिन्दी दिवस, बाल दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि मनाए जाते हैं। बाल फिल्म एवं प्रकृति निरीक्षण हेतु ले जाया जाता है। खेलकूद,

साहित्यिक प्रतियोगिताएँ होती हैं। विजेताओं को शाला के वार्षिक उत्सव में पुरस्कार दिए जाते हैं।

इन सबके अलावा वार्षिकोत्सव का हम सभी को बड़ी बेसब्री से इंतजार रहता है। वार्षिकोत्सव ऐसा उत्सव होता है जहाँ भयमुक्त होकर हम इसे एक साथ मिलजुलकर मनाते हैं।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव मनाया गया। हर बार की तरह ही वार्षिक उत्सव की योजना छात्रों और अध्यापकों ने साथ मिलकर बनाई थी। हमारे विद्यालय में हर वर्ष एक परिकल्पना के आधार पर वार्षिकोत्सव मनाया जाता है। इस वर्ष हमारे वार्षिकोत्सव का विषय कन्या भ्रूण हत्या था। विषय के आधार पर अध्यापकों ने हम लोगों को दलों में बाँट लिया।

मुझे मंच-सज्जा और ध्वनि की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। कुछ छात्रों ने अध्यापकों के साथ मिलकर प्रस्तुतिकरण, एकांकी और गीत तैयार किए। लगातार एक महीने की कड़ी तैयारी के बाद हमारा कार्यक्रम तैयार हुआ। कार्यक्रम को देखने के लिए स्वयं राज्य के शिक्षामंत्री आने वाले थे। अत: पूरा विद्यालय कड़ी मेहनत कर रहा था। कार्यक्रम की शुरुवात सरस्वती और गणेश वंदना से हुई। पूरा कार्यक्रम बड़ी ही सुंदर और आबाध गति से संपन्न हुआ। शिक्षामंत्री ने तो एकांकी ख़त्म होने पर खड़े होकर विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। अंत में पुरस्कार वितरण और राष्ट्रीय गीत के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

प्र. 14. अपने क्षेत्र के पोस्टमास्टर को ठीक से डाक वितरण न होने की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए पत्र लिखिए। 5

अमर कौशिक
मकान नं. 10
नकुलविहार
नई दिल्ली- 110 035
दिनाँक : 18 जुलाई 20XX

मुख्य डाकपाल
मुख्य डाकघर
कश्मीरी गेट
नई दिल्ली- 110 006
माननीय महोदय
विषय : डाक की उचित व्यवस्था के लिए आग्रह
मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र, नकुल विहार, में डाक-वितरण की अवस्था की ओर दिलाना चाहता हूँ। आपके क्षेत्र में डाक-वितरण की व्यवस्था नितान्त शोचनीय है। कुछ दिनों से हमारी डाक समय पर नहीं मिल रही है। साधारण पत्र दो सप्ताह के बाद प्राप्त होते है। कई बार पता सही और स्पष्ट लिखा होने के बावजूद पत्र गलत जगह पड़े हुए मिले है।
आशा है कि आप शीघ्र उपयुक्त बातों पर ध्यान देकर उचित कार्यवाही करें ताकि डाकिया फिर ऐसी लापरवाही न करे।
सधन्यवाद
भवदीय
अमर कौशिक

अथवा

छात्रावास में रहने वाली अपनी छोटी बहन को फैशन की ओर अधिक रुझान न रख, ध्यानपूर्वक पढ़ाई करने की सीख देते हुए पत्र लिखिए।
बी.3,
आदर्श नगर,
दिल्ली।
प्रिय बहन हेमा,
तुम्हारा पत्र मिला पढ़कर बहुत दुख हुआ कि तुम्हे इस परीक्षा में केवल 60 अंक मिले है। माँ बता रही थी कि तुम्हारा ध्यान फैशन में बहुत ज्यादा लगा रहता है। मैं फैशन के खिलाफ नहीं परंतु अगर वह आपकी पढ़ाई और भविष्य के बीच में आए तो, अवश्य हूँ।

अपनी दिनचर्या नियमित करो और हर क्षण अपने लक्ष्य पर दृष्टि रखो। तुम्हें ज्ञात होगा कि जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं, उन्होंने अपने जीवन के एक क्षण को भी व्यर्थ नहीं जाने दिया। यदि तुम एकाग्र मन से नहीं पढ़ोगी, तो परीक्षा में असफल होने के कारण तुम्हारा भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा। अपना ध्यान पढ़ाई में लगाओ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम पढ़ाई का मूल्य समझोगी। माता जी और पिता जी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारी बहन,

सीमा।

दिनाँक -x-x-20xx

प्र. 15. कपड़े धोने वाले पावडर का विज्ञापन तैयार कीजिए: 5

उजाला

'बेदाग सफाई, सिर्फ़ दस रूपए में उजाला है लाई'

बेदाग सफाई पानी है,

कीमत भी बचानी है,

घर ले जाओ उजाला ही,

खुशियों की चाबी है ।